International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पर्यावरणीय जागरूकता एवं स्थिरता

डॉ0 प्रियंका कुमारी

सहायक प्राध्यापिका
भूगोल विभाग
टी.एन.बी. महाविद्यालय, भागलपुर

मानव प्रकृति की सबसे जटिल और सर्वश्रेष्ठ रचना है। प्रारंभ में जब मानव के पास बुद्धि, ज्ञान, विधि-प्रविधि आदि का अभाव था, भोजन वस्त्र और आवास तक ही उनकी आवश्यकताएँ सीमित थी तभी से वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण से संघर्ष करता रहा है। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर अन्यान्य क्रियाओं का जन्म हुआ था। समय के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान, विधि-प्रविधि, अनुभव का विकास होता गया तो वहीं दूसरी तरफ बढ़ती जनसंख्या ने विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं को जन्म दिया। इन सभी कारणों से मानव की क्रियाएँ पर्यावरण में दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई जिसके फलस्वरूप पर्यावरण की मौलिकता का ह्रास होता गया। आज के आधुनिक युग में उपभोक्तावादी मानव ने अपनी सुविधाओं के लिए पर्यावरण को इतना असंतुलित कर दिया है कि आज पूरा विश्व विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय संकटो से लड़ता नजर आ रहा है। ऐसे समय में पर्यावरणीय जागरूकता और स्थिरता केवल एक विचारधारा नहीं बल्कि मानव अस्तित्व की आवश्यकता बन चुकी है।

पर्यावरणी जागरूकता का तात्पर्य होता है पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं, उनके कारणों और उनके समाधान के प्रति लोगों में समझ और चेतना का होना। यह समझना की पर्यावरण क्या है और मानवीय क्रियाकलप उसे कैसे प्रभावित करता है तथा उससे उत्पन्न संकट से कैसे बचा जा सकता है। अगर सरल शब्दों में कहे तो पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार होना ही पर्यावरणीय जागरूकता कलाता है। जबकि स्थिारता का अर्थ होता है ऐसी स्वस्थ जीवनशैली अपनाना जिससे वर्तमान की जरूरतें पूरी हों और साथ ही भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन सुरक्षित रह सकें अर्थात् ऐसा विकास जिसमें संसाधनों का उपयोग हो दुरुपयोग नहीं, हम विकास करें, विनाश नहीं और हम वर्तमान में तो जिये ही साथ ही कल के लिए भी बचाकर रखें। पर्यावरणीय जागरूकता के पश्चात् ही पर्यावरणीय स्थिरता संभव है। जब लोग पर्यावरण के प्रति जागरूक होगें तभी वे स्वस्थ और स्थायी जीवनशैली को अपनायेगें और तभी हमारा भविष्य भी सुरक्षित होगा। अर्थात् पर्यावरणीय जागरूकता विचार बदलती है। और स्थिरता भविष्य बनाती है।

आज मानवीय गतिविधियों के कारण हमारा पर्यावरण गंभीर संकट का समाना कर रहा है। विभिन्न वाहनों, कारखानों और कोयले के उपयोग से वायु प्रदूषित हो रही है जिसके कारण दमा, फेफड़े के रोग और हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही है। नदियों और झीलों में औद्योगिक कचरों को, सीवर और प्लास्टिक डालने से जल प्रदूषित हो रहा है, जिसके कारण जलजनित रोग तो उत्पन्न हो ही रहे है साथ ही पीने योग्य जल की भी कमी का समाना करना पड़ रहा है। जंगलों की अंधाधुन कटाई से वर्षा की अनियमितता बढ़ गई है, जिसके कारण जैव विविधता, नष्ट हो रहा है। ग्रीनहाउस गैसों के कारण पृथ्वी गर्म हो रही है जिससे ग्लेशियर पिघल रहे है और समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता घट रही है तथा भू-जल की गुणवत्ता में भी ह्रास हो रहा है। प्लास्टिक कचरा तो जल और भूमि दोनों को नुकसान पहुंचा रहा है। समान्य शब्दों में कहे तो मानवीय गतिविधियों के कारण हमारी प्रकृति असंतुलित हो गयी है और ऐसे में समय रहते अगर समाज को पर्यावरण के प्रति जागरूक नहीं किया गया तो इसका सीधा प्रभाव समेत पूरे जगत को झेलना पड़ेगा पर्यावरण जागरूकता हमें प्रकृति के साथ सामांजस्य बनाकर जीने की सीख देती है इसलिए समाज में लोगों को अपेन अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी बोध कराना होगा, उन्हें समझाना होगा कि प्राकृतिक संसाधन सीमित है अगर उसका विवेकपूर्ण उपयोग नहीं किया गया तो हमारा भविष्य उनसे वंचित रह जायेगा। उन्हें बताना होगा कि सतत् विकास और हरित जीवन शैली को अपनाना तथा प्रदूषण फैलाने वाले व्यवहारों से बचना कितना आवश्यकत है और इसके लिए शिक्षा से सशक्त

और प्रभावी माध्यम दूसरा कोई नहीं। शिक्ष न केवल व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करती है बल्कि उसके दृष्टिकोण, व्यवहार और मूल्यों में भी परिवर्तन लाती है। इसलिए यदि पर्यावरण संरक्षण को, स्थायी रूप से सफल बनाता है तो इसकी शुरूआत शिक्षा के विभिन्न स्तरों जैसे - विद्यालयों स्तर की शिक्षा, उच्च शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा आदि के माध्यम से करनी होगी क्योंकि शिक्षा के माध्यम से विधर्थियों को पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं जैसे ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण, जैव विविधता के ह्रास के बारे में सही-सही वैज्ञानिक जानकारी मिलती है और जब लोगों को समस्याओं का सही ज्ञान होता है तब वे समाधान के प्रति रूचि लेते है। शिक्षा व्यक्ति में प्रकृति के प्रति संवदेनशीलता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है और यह समझ विकसित करती है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका अहम हिस्सा है, दोनों का अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर करता है। प्रकृति जहाँ हमें जीवित रहने के लिए वायु, जल, भोजन जैसे संसाधन प्रदान करती है तो वहीं मनुष्य अपनी समझ-बूझ, अपनी कार्य-कुशलता अपने ज्ञान और तकनीक से प्रकृति का संवारता है उसे जन मानस के लिए और उपयोगी बनाता है। यह सह-अस्तित्व दोनों के संतुलन के लिए आवश्यक है। इसलिए हमें प्रकृति का आदर करना चाहिए प्रकृति ने हमें जितने भी संसाधन दिये है उसका विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। जिस दिन हम प्रकृति को समझ लेगें उस दिन से हमारा समाज, हमारा देश विकास की नई ऊँचाई को छूने की ओर अग्रसर होगा क्योंकि इस धरती पर प्रकृति प्रदत्त सबसे महत्वपूर्ण संसाधन अगर कोई है तो वह स्वयं मानव है। मानव ज्ञान (Mens Knowledge) और संसाधन (Resource) का बड़ा ही गहरा संबंध है। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता जिम्मरमैन ने कहा - ‘‘Mens Knowledge is the mother of all resources.” अर्थात् मानव का ज्ञान सभी संसाधनों की जननी है। प्रकृति में उपलब्ध वस्तुएँ संसाधन तभी बनती है जब मनुष्य उन्हें अपने ज्ञान, बुद्धि और तकनीक से उपयोग के काबिल बनाता है। मानव के ज्ञान के बिना पृथ्वी पर मौजूद जल, वन, खनिज, वायु, भूमि केवल प्रकृति के तत्व है, संसाधन नहीं। जैसे पेट्रोलियम पहले केवल एक तरल पदार्थ था लेकिन मानव ज्ञान के कारण वह आज उर्जा का महत्वपूर्ण स्त्रोत बन गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर हम प्राकृतिक तत्वों का संरक्षण करते है और मानवीय ज्ञान का उपयोग कर उसे और अधिक उपयोगी बनाते है तो हमें तो लाभ होगा ही साथ ही हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे लाभान्वित होगी और हमारे देश भी आर्थिक रूप से और अधिक सुदृढ़ होगा। इस प्रकार निश्चित रूप से हम विकास की ऊँचाईयों को छु पायेंगे। अतः आवश्यक है कि हम शिक्षा के विभिन्न स्तरों से पर्यावरण के प्रति संवदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना को विकसित करें। इसके लिए विद्यालयी स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए सिर्फ सैद्धांतिक रूप में नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप में भी। क्योंकि विद्यालय वह पावन स्थल है जहाँ बच्चों के व्यक्तित्व और आदतों का निर्माण होता है और अगर हम किताबी ज्ञान के साथ-साथ वृक्षारोपन, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण परियोजना प्रकृति-भ्रमण, इको-कल्ब, NSS, NCC आदि से बच्चों को जोड़कर उन्हें व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करते है तो यह ज्ञान पूरे जीवन काल तक उनके साथ रहेगा और वह जीवन भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग रहेगें। उच्च स्तर की शिक्षा में संलग्न छात्र काफी परिपक्व होते है, इसलिए इस स्तर पर आवश्यक है कि पर्यावरण अध्ययन को अंतर-विषयक (Interdisciplinary) रूप में पढ़ाया जाए। सेमिनार, वर्कशॉप, सम्मेलन आदि का आयोजन समय-समय पर करवा कर पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर गंभीर चर्चाएँ की जानी चाहिए। रिसर्च प्रोजेक्ट, फील्ड वर्क, केस स्टडी के माध्यम से छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति रूचित को विकसित किया जाना चाहिए साथ ही छात्रों को नीतिगत सुझाव औश्र सामाजिक कार्यों से भी जोड़ा जाना चाहिए। कॉलेज परिसर को हरित परिसर (Green Campus) की अवधारणा के साथ विकसित किया जाना चाहिए ताकि छात्र जहाँ अपना बहुमूल्य समय शिक्षा प्राप्त करने में वयतीत करते है वहाँ के हरित वातावरण को देखकर उनके अंदर पर्यावरण के प्रति आदर का भाव विकसित हो।

समाज में कई ऐसे व्यक्ति होते है जो औपचारिक शिक्षा से काफी दूर होते है। तो उन लोगों तक अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण संबंधी बातों को पहुँचाया जाना चाहिए। जनसंचार माध्यम जैसे टी.वी. और रेडियों कार्यक्रम, डॉक्यूमेंट्री फिल्मे, ऑनलाइन बेबिनार, सोशल मीडिया अभियान आदि के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना चाहिए। इसके अतिरिक्त जन जागरूकता अभयान, रैलियाँ, नुक्कड़-नाटक आदि का आयोजन भी इस दिशा में प्रभावी होगा। स्वंयसेवी संस्थाएँ, सामाजिक संगठन, ग्राम सभाएँ, महिला समूह, यूवा क्लब भी इसमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस प्रकार विद्यालय, विश्व विद्यालय और समाज-तीनों अगर मिलकर इस दिशा में समन्वित रूप से प्रयास करते है तो निश्चित रूप से पर्यावरण जागरूकता जानकारी तक सीमित न रह कर व्यक्तियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लायेगी

वैसे तो भारत सरकार पर्यावरण संरक्षण, जागरूकता और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियाँ और योजनाएँ चला रही है जैसे गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करने, उसकी जैव विविधता को संरक्षित करने और नदी की पारिस्थितिकी को पुनर्जीवित करने के लिए नमामि गंगे योजना, प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, साफ-सफाई को बढ़ावा देने हेतु स्वच्छ भारत मिशन, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना, उर्जा स्वच्छता बढ़ाने तथा प्रदूषण कम करने हेतु सौर उर्जा और स्वच्छ उर्जा योजना, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देकर वाहन प्रदूषण कम करने के लिए इलेक्ट्रिक मोबिलिटी (FAME India Scheme) जैसी योजनाएँ चलायी जा रही है। विश्व पर्यावरण दिवस, पृथ्वी दिवस, जल संरक्षण कार्यक्रम आदि में जागरूकता-उन्मुख कार्यक्रम और अभियान चलाये जा रहे है तो निश्चित रूप से इस दिशा में सहायक सिद्ध होगा। क्योंकि ये सरकारी प्रयास केवल नियमों तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे लोगों को पर्यावरण विरोधी व्यवहार बदलने, स्थिर जीवन शैली अपनाने, प्रकृतिक के प्रति जिम्मेदार बनने और स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत के निर्माण की दिशा में प्रेरित करते है। लेकिन यह भी सत्य है कि जब तक पर्यावरण संरक्षण को केवल सरकारी जिम्मेदारी समझा जायेगा तब तक इस समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं हो पायेगा। आवश्यकता है कि सरकार के साथ-साथ समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा इस दिशा में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। यदि लोग प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करें, स्वच्छ से वृक्षारोपण करें, पानी को बर्बाद न करे, कचरे का सही तरीके से निस्तारण करें उर्जा बचत करे तो निश्चित से इसका सकारात्मक प्रभाव पर्यावरण पर होगा। हरित परिवहन अर्थात् साइकिल, सार्वजनिक परिवहन, इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग, हरित उर्जा (सौर उर्जा, पवन उर्जा, बायोगैस) का उपयोग तथा अपने सतत् जीवन शैली में 3R के सिद्धांत का पालन करना भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। 3R का अर्थ यह है Reduce, Reuse और Recycle, Reduce से तात्पर्य यह है कि अनावश्यक वस्तुओं का उपयोग कम करना जैसे प्लास्टिक का कम इस्तेमाल, फालतू खरीदारी से बचना साथ ही पानी और बिजली की बचत। इसी प्रकार Reuse का मतलब होता है किसी वस्तु को फेकने के बजाय उसे दोबारा इस्तेमाल करना, जैसे कागज के दोनों तरफ लिखना, काँच के बर्तनों का दुबारा उपयोग पुराने कपड़ों से नयी सामग्री का निर्माण आदि जबकि Recycle जैसे से तात्पर्य है कचरे को प्रक्रिया द्वारा नये उत्पाद में बदलना जैसे कागज, प्लास्टिक धातु और कांच की रीसाइक्लिंग, जैविक कचरे से खाद बनाना इत्यादि। 3R सिद्धांत हमें सिखाता है कि हम कचरा कम पैदा करें, वस्तुओं का अधिकतम उपयोग करें तथा बचे हुए कचरे को पुनः उपयोग के योग्य बनाए। अगर हम सभी 3R के सिद्धांत के अनुरूप कार्य करेगें तो निश्चित ही इससे न केवल पर्यावरण सुरक्षित रहेगा बल्कि संसाधनों की बचत भी होगी और प्रदूषण में कमी भी आयेगी। परतु वस्तुस्थिति यह है कि जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण और शहरीकरण, उपभोक्तावादी जीवन शैली, शिक्षा और जागरूकता की कमी, नीतियों का कमजोर क्रियान्वयन आदि कई ऐसी चुनौतियाँ है जो पर्यावरणीय जागरूकता और स्थिरता के रास्ते में विद्यमान है। चुनौतियाँ बड़ी है लेकिन उसका समाधान भी संभव है। चूँकि पर्यावरण की समृद्धि ही मानव सभ्यता की समृद्धि सुनिश्चित करती है इसलिए सामूहिक जिम्मेदारी ही एकमात्र समाधान/विकल्प है। इसलिए आवश्यकता है कि सरकार, समाज और व्यक्ति मिलकर सामुहिक प्रयास करे। सरकार शिक्षा के हर स्तर पर पर्यावरण शिक्षा को व्यवहारिक रूप से अनिवार्य बनाएँ तथा सभी योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करें। समाज द्वारा विभिन्न प्रकार के अभियान चलाकर तथा अन्य छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा भी पर्यावरण को संरक्षित करने का कार्य किया जाए। आम जनता को चाहिए कि वह इस दिशा में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करते हुए 3R सिद्धांत का पालन करें तथा पर्यावरण संरक्षण को अपना नैतिक कर्तव्य मानते हुए प्रकृति का संरक्षण करें। इस प्रकार यदि सरकार, समाज और व्यक्ति तीनों मिलकर अपने-अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते है तो एक बड़ा परिवर्तन हो सकता है तथा पर्यावरणीय जागरूकता और स्थिरता को वास्तविक रूप में सफल बनाया जा सकता है।

“पर्यावरण की रक्षा कोई विकल्प नहीं, बल्कि हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। धरती बचाओं - जीवन बचाओं - भविष्य बचाओं”